Dr. Vandana Suman
Associate professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A Semester - 1 Philosophy CC-04
Indian and western Ethics

"Ayer: Emotivism" (संवेगवाद) 1.

संवेगवाद के अनुसार नैतिक शब्द "संवेगात्मक" (Emotive) होते हैं। संवेगवाद का विकास 'तार्किक प्रत्यक्षवाद' का परिणाम है। इसके प्रमुख दार्शनिक मारिज श्लिक, रुडोल्फ कार्नेप, ए.जे. एयर आदि हैं।

एयर के अनुसार "नैतिक निर्णय केवल संवेगात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं।"

तार्किक प्रत्यक्षवादियों के अनुसार केवल अनुभवात्मक (संश्लेषणात्मक) एवं विश्लेषणात्मक वाक्य ही सार्थक होते हैं, अन्य सभी वाक्य निरर्थक हैं।

कार्नेप, एयर तथा स्टीवेन्सन संवेगवाद के प्रमुख समर्थक माने जाते हैं। संवेगवादियों के अनुसार नैतिक निर्णय तथ्यात्मक निर्णयों की भाँति सत्य या असत्य नहीं होते और शब्दों की परिभाषा पर आधारित न होने के कारण ये निर्णय गणित एवं तर्क-शास्त्र के वाक्यों की भाँति विश्लेषणात्मक भी नहीं होते। यही कारण है कि कार्नेप तथा एयर नैतिक निर्णयों को उस अर्थ में सार्थक नहीं मानते, जिस अर्थ में अनुभवात्मक वाक्य और विश्लेषणात्मक वाक्य सार्थक होते हैं।

एयर, जो तार्किक प्रत्यक्षवाद के प्रबल समर्थक रहे हैं, कहते हैं कि नैतिक वाक्य वर्णन नहीं,

FEBRUARY
15 SATURDAY

वरन भावनाओं या संवेगों की अभिव्यक्ति करता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति या अवबोध केवल शारीरिक मुद्राओं या शब्दों एवं वाक्यों के द्वारा ही नहीं वरन प्रयोगों के द्वारा भी होती है। जब कोई कहता है कि "चोरी गलत है"। तब वह चोरी के संबंध में अपनी घृणा या अपनी नापसंदगी ही जाहिर कर रहा होता है। मानसिक स्थिति का वर्णन करना एक बात है और मानसिक स्थिति को अभिव्यक्त करना दूसरी बात है। नैतिक वाक्य का मुख्य काम भावनाओं को अभिव्यक्त करना ही होता है। अतः यदि नैतिक वाक्यों का कोई अर्थ है, तो वह संवेगात्मक अर्थ ही हो सकता है, वर्णनात्मक अर्थ नहीं।

एयर इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं कि संश्लेषणात्मक कथन सिर्फ तभी सार्थक होते हैं जब वे इन्द्रियानुभव द्वारा सत्यापनीय हों। इसलिए परमवादी सिद्धान्त इनकी इस केन्द्रीय स्थापना के विरुद्ध जाता है। एयर यह दिखला कर इस कठिनाई से बचना चाहते हैं कि नैतिक कथनों का सही विश्लेषण एक तीसरे सिद्धांत द्वारा दिया जा सकता है जो इनके रैडिकल इन्द्रियानुभववाद के साथ संगत है।

16 SUNDAY

एयर इस बात को

स्वीकार करते हैं कि मौलिक नैतिक अवधारणाएँ इस अर्थ में अविश्लेषणीय होती हैं कि इन शब्दों की वैधता की जाँच के लिए कोई मापदण्ड नहीं है। लोगों में ये अवधारणाएँ मौजूद रहती हैं। एयर कहते हैं कि वे इस हद तक "परमवादियों" से सहमत हैं। लेकिन एयर के अनुसार "परमवादियों" से अलग वे इसकी व्याख्या कर सकते हैं कि ऐसा क्यों है। इनके अनुसार मौलिक नैतिक अवधारणाएँ इसलिए अविश्लेषणीय हैं क्योंकि ये "छद्म अवधारणाएँ" (Pseudo concepts) हैं।

नैतिक अवधारणाओं को "छद्म अवधारणाएँ" कहने से एयर का तात्पर्य यह है कि ये अवधारणाएँ वर्णनात्मक नहीं होती हैं, इनके माध्यम से किन्हीं तथ्यों की जानकारी नहीं दी जाती है। एयर के विचार में किसी तर्कवाक्य में किसी नैतिक प्रतीक की उपस्थिति से उसके तथ्यात्मक सामग्री में कुछ भी नहीं जुड़ता है। एयर के अनुसार, तथ्यों की दृष्टि से "तुमने पैसे चुराए" और "तुमने पैसे चुराकर अनुचित काम किया" इन दोनों कथनों के बीच कोई अंतर नहीं है। इस दूसरे वाक्य में पहले कथन की तुलना में तथ्य-सम्बंधी कोई नयी जानकारी नहीं दी जा रही है। नैतिक शब्द "अनुचित" द्वारा किन्हीं तथ्यों को व्यक्त

नहीं किया जा रहा है, बल्कि मात्र नैतिक नापसंदगी (disapproval) की भावना को व्यक्त किया जा रहा है। यह वैसी तरह है जैसे "तुमने पैसे चुराए" को एक विशेष आश्चर्यमिश्रित लहजे में बोला जा रहा हो, या कुछ विशेष विस्मयादिबोधक चिह्नों के साथ लिखा जा रहा हो। यह लहजा या विस्मयादिबोधक चिह्न वाक्य के शाब्दिक अर्थ में कुछ भी नहीं जोड़ते हैं। वे मात्र यह दिखाते हैं कि इस वाक्य के साथ वक्ता की कुछ भावनाएँ जुड़ी हुई हैं।

एयर के अनुसार अगर इस दूसरे कथन का सामान्यीकरण कर यह कहा जाए कि "पैसा चुराना अनुचित है" तो इस वाक्य का कोई तथ्यात्मक अर्थ नहीं है, और इसीलिए इसके सत्य या असत्य होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। यह ऐसे है जैसे लिखा जा रहा हो "पैसे चुराना!!" जहाँ पर विस्मयादिबोधक चिह्नों के आकार और मोटाई एक उपयुक्त परम्परा द्वारा यह दिखाते हैं कि एक विशेष किस्म की नैतिक नापसंदगी की भावना को व्यक्त किया जा रहा है। यहाँ पर ऐसा भी नहीं कहा जा रहा है कुछ जो सत्य या असत्य हो। अब कोई किसी विशेष किस्म के कार्य को

उचित या अनुचित कहता है, तो वह कोई तथ्यात्मक दावा ([illegible]) नहीं होता है, क्योंकि वह कोई सत्य अथवा असत्यापित विधेय नहीं, कोई कथन होता है, बल्कि वह सिर्फ अपनी नैतिक भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। स्टीवेन्सन के अनुसार जो व्यक्ति 'अनुचित' के बारे में कहता है, वह भाव... क्योंकि नैतिकता प्रतीकों पर लागू होता है। नैतिक शब्दों का कार्य मूलतः संवेगात्मक (emotive) होता है।

सी० वी० ज; इस [illegible] तार्किक की भूमिका में ही स्टीवेन्सन यह भी स्वीकार करते हैं कि कई बार नैतिक शब्दों का वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। जैसे - कोई व्यक्ति उपयोगितावादी हो, तो किसी कर्म को 'उचित' कहने का उसका तात्पर्य मात्र यह हो सकता है कि वह इस किस्म का कर्म है, जिससे सामान्य सुख में वृद्धि होती है, लेकिन स्टीवेन्सन के अनुसार ऐसा विरला ही होता है। उनके विचार में कई नैतिक निर्णयों में नैतिक शब्दों का इस्तेमाल "विशुद्ध रूप से" मानक तरीके से किया जाता है। और संवेगों का संबंध ऐसे ही नैतिक निर्णयों से है।

स्टीवेन्सन ने जिस तरह संवेगवाद की व्याख्या की है और जिस तरह उसे आम तौर से समझा गया है, इस संदर्भ में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहला, यह कि हालांकि स्टीवेन्सन मानक

नैतिक पदों को संवेगात्मक माना है लेकिन फिर भी इन्होंने स्वीकार किया है कि नैतिक पदों का कुछ वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। अपनी किताब के छठे अध्याय में भी एयर ने वर्णनात्मक नैतिक प्रतीक और मानक नैतिक प्रतीक के बीच अंतर किया है। इसी तरह, दस वर्ष बाद लिखी गयी भूमिका में भी एयर यह स्वीकार करते हैं कि कई बार नैतिक शब्दों का वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। इसके अलावा एयर ने नैतिक निर्णयों को आदेश से भी जोड़ा है।

अपनी किताब 'लैंग्वेज ट्रुथ एण्ड लॉजिक' के छठे अध्याय में एयर ने जिस तरह से अपने नैतिक सिद्धान्त को प्रस्तुत किया, उससे ऐसा लगता है कि इनकी नीतिशास्त्र में विशेष रुचि नहीं है, बल्कि इनकी दिलचस्पी मात्र नीतिशास्त्र का ऐसा सिद्धांत देने में है जो इनके तार्किक प्रत्यक्षवाद के साथ संगत हो, या जिसके द्वारा इनके तार्किक प्रत्यक्षवाद पर आपत्तियों का निराकरण किया जा सके। जैसे इन्होंने 'परमवाद' को इस आधार पर अस्वीकार किया है कि वह इनके अर्थ के सत्यापनीयता सिद्धांत के विरुद्ध जा रहा है। वैसे, बाद में एयर ने इसे यह कह कर दुरुस्त करने का प्रयत्न किया कि संवेगवाद तार्किक प्रत्यक्षवाद से स्वतंत्र रूप में

एक ऐसा सिद्धांत है। स्टीवेन्सन तथा रुडोल्फ कार्नाप के संवेगवाद से अलग एयर के विचारों में तीन मुख्य बातें हैं:

(i) नीतिवादी नैतिक पद वर्णनात्मक नहीं, बल्कि संवेगात्मक होते हैं।

(ii) नैतिक निर्णयों के सन्दर्भ में सत्यता और असत्यता का प्रश्न उठाना बेकार है। (असंज्ञानवाद)

(iii) नैतिक विधि के बारे में एयर के विचार हैं: अन्तिम विश्लेषण में जब तथ्य सम्बन्धी सारी बातें हो चुकी होती हैं, तो फिर सिर्फ भाषा के संवेगात्मक प्रयोग द्वारा एक-दूसरे को प्रभावित करने का प्रयत्न किया जा सकता है।

संवेगवाद एक नैतिक असंज्ञानवाद है।

एयर ने संवेगात्मक अर्थ को महत्व देते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "लैंग्वेज ट्रुथ एंड लॉजिक" में कहा था कि नैतिक भाषा का प्रयोग न तो वागनुभाविक तथ्य के लिए और न ही अनुभव से ज्ञात किसी वस्तुस्थिति के वर्णन के लिए होता है। इस भाषा का प्रयोग तो केवल संवेगों की अभिव्यक्ति के लिए ही होता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नैतिक भाषा का प्रयोग करनेवाला व्यक्ति इस भाषा का प्रयोग केवल अपने संवेगों को अभिव्यक्त करने के लिए ही नहीं

FEBRUARY
22 SATURDAY

करता, बल्कि वह ऐसे भाषा का प्रयोग अपने संवेगों के अनुरूप दूसरों में भी वैसे ही संवेगों को उत्पन्न कराने के लिए भी करता है।

ऑगडेन रिचर्ड्स तथा स्टीवेंसन ने नैतिक भाषा के इन दोनों ही प्रकार के प्रयोगों को स्वीकार किया है। वस्तुतः सभी संवेगवादी नैतिक भाषा के इन दोनों अर्थात अभिव्यंजनात्मक तथा उत्प्रेरणात्मक दोनों ही प्रयोगों को स्वीकार करते हैं।